जलायें आत्म-दीप, मनायें सच्ची दीवाली

कार्तिक मास में शरद पूर्णिमा के बाद आने वाली अमावस्या की घोर रात्रि के दिन अनगिनत दीप जलाकर मनाये जाने वाला यह पर्व पूरे जनमानस को खुशियों से भर देता है। इस पर्व पर बच्चे, बूढ़े हर वर्ग के लोग अपने अन्दर अल्पकालीन खुशियों के उमंगों में झूम उठते है। सभी अपने-अपने घरों की तथा कपड़ों की सफाई करते हैं। व्यापारी वर्ग इस शुभ दिवस पर अपने पुराने खाते को समाप्त कर नया खाता शुरू करता है। मान्यता है कि धन की देवी श्री लक्ष्मी इस रात्रि में भ्रमण करती है और अलौकिक गृहों को धन-धान्य से परिपूर्ण कर देती हैं।

मान्यताओं के अनुसार यह भी कहा जाता है कि जब राम, रावण पर विजय प्राप्त कर अयोध्या लौटे तो उस खुशी में पूरे नगर में दीप जलाकर दीपोत्सव मनाया गया। तब से इसे यादगार के रूप में आज तक मनाया जाता है। परन्तु यह दीपावली उस दिन मनाई जाती है जिस दिन अमावस्या यानि घोर अन्धेरी रात होती है जिसमें असंख्य दीपक जलाकर खुशियों का इजहार करते हैं।जहाँ तक सवाल लक्ष्मी के घर आने का है तो आप स्वयं समझ सकते है कि यदि लक्ष्मी इस दिन आती और केवल घर की और कपड़े की सफाई कर लेने से लक्ष्मी का वास हो जाये तो रोज इस तरह के कर्मकाण्ड करके सभी धनवान हो जायें। इस दिन लक्ष्मी आने का मतलब तो यह नहीं कि हम जुआ खेलेंगे तो लक्ष्मी भी उसमें हमारी मदद करेगी। जुआ खेलना तो एक बुरी आदत है। बुरे कार्यों के लिए कोई भी देवी-देवता अपनी दैवी संपदाओं का उपयोग कैसे कर सकता है?

जहाँ तक देवी-देवताओं के सम्बन्ध में बाते कही गयी वह केवल उनके पुरूषार्थ के उपर ही कही गयी कि जिसने अच्छी तपस्या की तो देवी देवतायें प्रसन्न हुए और उन्हें धन-धान्य तथा शक्तियों के वरदान दिये। और यह केवल तभी सम्भव हो पाया जब उन्होंने अपने आत्म-दीप को जलाया तथा बुराइयों को दरकिनार किया। आज के परिवेश में लोग न तो आन्तरिक सफाई करते है, और न आत्म दीप जलाकर अज्ञानता के अंधकार को दूर करते, केवल बाहरी कपड़े और घर की सफाई करके तथा मिट्टी के दीप जलाकर ही लक्ष्मी से वर प्राप्त करना चाहते है। यह तो आकाश के तारे जैसा है। आज अमावस की घोर रात्रि से ज्यादा तो मनुष्य के अन्दर छिपा अज्ञान ही है जिसमें इंसानियत, मानवता, श्रेष्ठाचार, परिवारवाद, अध्यात्मवाद प्रायः लुप्त-सा हो गया है। यह अज्ञानता की रात इतनी भयावह है कि इसमें मनुष्य को कुछ भी नहीं सूझ रहा है। न तो भाई-बहन का सम्बन्ध, न मात-पिता का सम्बन्ध और न हीं माँ बेटे का। इस तरह की अज्ञानता की रात में लक्ष्मी को अपने घर में बुलाने की कवायद करने के लिए ज्ञान घृत से अपने आत्म-दीप जलाकर पहले खुद को रोशन कर अन्दर बाहर की पूर्ण रूप से सफाई चाहिए। जहाँ तक व्यापारियों के पुराने खाते समाप्त कर नये खाते शुरू करने की बात है तो इसका तात्पर्य केवल व्यापार तथा अर्थ क्षेत्र से ही नहीं जोड़ा जाना चाहिए बल्कि अपने पिछले कर्मों तथा अन्य अमानवीय बातों को ध्यान में रखते हुए बीती बातों को समाप्त कर नये विचार, नयी क्रान्ति, सद्भाव, एकता, सदाचार तथा वसुधैव कुटुम्बकम की भावना रूपी अमूल्य खजाने से झोली भरने के लिए नयी जिन्दगी, नये खाते इस शुभ मुहुर्त पर शुरूआत करनी चाहिए। आज इन्ही सभी मूल्यों के अवमूल्यन के कारण आज तक लक्ष्मी नहीं आई और हम और ही दरिद्र होते गये। दरिद्र शब्द का अर्थ केवल स्थूल धन से ही नहीं है। क्योंकि आज तो बहुत लोग करोड़पति, लखपति और धनवान है परन्तु वे भी और ही ढेर दीपक जलाकर और ही उत्साह से मनाते हैं, क्यों ? क्योंकि सर्वगुण सम्पन्न लक्ष्मी के आने से जो पवित्रता, अतीन्द्रिय सुख, असीम शान्ति की अनुभूति होनी चाहिए वह उनके भी पास नहीं है। इसलिए परमात्मा शिव ने जो ज्ञान घृत दिये उससे अपने आत्म दीप को जलायें तथा जो आसुरी वृत्तियों की सफाई तथा दैवी वृत्ति धारण करने की विधि बताई है उसका अनुसरण करें तभी लक्ष्मी आकर हमारे अलौकिक घरों को धन-धान्य से परिपूर्ण करने के लिए बाध्य होगी और सच्ची दीपावली का पर्व हम सभी के लिए सार्थक हो सकेगा।